International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

समकालीन समय में भारत-जापान द्विपक्षीय संबंधों का अध्ययन: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

मोनिका कुमावत[1], एवं श्रद्धा तिवारी[2]

[1]पीएचडी शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (MLSU) उदयपुर।
[2]प्रोफ़ेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, मीरा गर्ल्स कॉलेज, उदयपुर।

शोध सार

भारत और जापान दोनों देशों के बीच मित्रता का लंबा इतिहास रहा है, जिसकी जड़े आध्यात्मिक जुड़ाव और मजबूत सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत संबंधों में निहित है। जिसकी शुरुआत छठी शताब्दी ईस्वी में देखी जा सकती हैं। वहीं द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद 28 अप्रैल, 1952 से दोनों देशों ने अपने द्विपक्षीय संबंधों की राजनयिक यात्रा प्रारम्भ की थी, आज वह 'विशेष रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारी' के रूप में विकसित हो गयी है। आज भारत और जापान के मध्य संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं रणनीतिक सभी आयामों पर आधारित हैं। अत: भारत-जापान एशिया की इन दो महाशक्तियों के बीच बहुआयामी सहयोग न केवल इनके द्विपक्षीय हित में है, अपितु क्षेत्रीय शांति, स्थिरता एवं बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की स्थापना की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण है।

यह शोध पत्र भारत-जापान द्विपक्षीय संबंधों के राजनीतिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकी, सामरिक एवं विभिन्न द्विपक्षीय समझौतों के परिप्रेक्ष्य के साथ सांस्कृतिक और पर्यावरणीय आयामों का मौलिक और विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। साथ ही उन संभावनाओं को प्रकट करता है जो भारत और जापान दोनों ही राष्ट्रों के एक उन्नत भविष्य के लिए आवश्यक है। इसके अलावा यह शोध पत्र भारत-जापान दोनों के द्विपक्षीय संबंधों में आने वाली चुनौतियों को भी बताता है जो दोनों देशों के संबंधों को उच्चतम स्तर तक पहुंचने में रूकावट का कार्य करती है।

मुख्य शब्द: भारत-जापान संबंध, बोद्ध धर्म, सैन्य अभ्यास, रणनीतिक साझेदारी, क्वाड, ओडीए।

प्रस्तावना

भारत-जापान एशिया में प्रमुख लोकतांत्रिक शक्तियां हैं। आज भारत एशिया में सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश हैं। वहीं जापान एक विकसित लोकतांत्रिक देश है। दोनों देश क्षेत्र के बहुलवादी और समावेशी विकास को साकार करने में लोकतंत्र, शांति, कानून के शासन, सहिष्णुता पर्यावरण के प्रति सम्मान के मूल्यों को साझा करते है। 1952 में जापान से हुई मैत्री संधि जो द्विपक्षीय सम्बन्धो में निर्णायक क्षण थी से भी पहले भारत व जापान के बीच एक दूसरे के करीब आने का लम्बा इतिहास रहा है, जो आध्यात्मिक, आत्मीयता और मजबूत सांस्कृतिक सभ्यता में निहित है, जो भारत में बौद्ध धर्म के उदय तथा भारतीय भिक्षु बोधिसेना की जापान यात्रा से जुड़ा है। इससे जापान की संस्कृति पर भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा,। भारत और जापान के बीच प्रारंभिक प्रत्यक्ष संबंध होने का प्रमाण 752 ईस्वी में देखा जा सकता है जब भारतीय भिक्षु बोधिसेना ने नारा के तोदाई जी मंदिर में बुद्ध प्रतिमा की स्थापना की थी।[1] भारत और जापान के बीच प्रत्यक्ष आदान-प्रदान की शुरुआत मीजी काल (1868 -1912) में हुई जब जापान ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया शुरू की तब से द्विपक्षीय संबंध दोनों देशों की कपास की खरीद के द्वारा विकसित हुए। इसके बाद दोनों देश तेंशिन ओकाकुश व रविन्द्रनाथ टैगौर की रचनाओं के माध्यम से एक-दूसरे के करीब आए जो 'एशिया की एकता' के पक्षधर थे। रास बिहारी बोस ने 1926 में 'सर्व एशिया लीग' की तथा सुभाष चन्द्र बोस ने भी सिंगापुर में 'आजाद हिंद फौज' (आई.एन.ए.) की स्थापना जापान की मदद से की तथा जापान ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान सुभाष चन्द्र बोस को मदद प्रदान की परन्तु इन घनिष्ठ एतिहासिक संबंधों के बावजूद भी भारत-जापान संबंधों में निरन्तर उतार चढाव रहा हैं।[2] द्वितीय विश्व युद्ध के समय भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था तथा मित्र राष्ट्रो की तरफ से युद्ध में भाग लिया तथा जापान धुरी शक्तियों में शामिल था के खिलाफ भारत युद्ध में शामिल हुआ। अत: इस समय भी दोनों देश एक दुसरे के विपरीत थे।[3]

शीत युद् के दौरान भी दोनों राष्ट्रों के संबंध बाधित थे, क्योंकि भारत ने गुटनिरपेक्ष विदेश नीति का पालन किया, जिसका झुकाव सोवियत संघ की ओर था वहीं अमेरिका जापान का सहयोगी था। 1991 में नरसिहां सरकार के द्वारा उदारीकरण की नीति द्वारा आर्थिक नीति में परिवर्तन करने तथा 'पूर्व की ओर देखो नीति' ने भारत को जापान के साथ मधुर और पहले से भी बेहतर सम्बन्ध बनाने को प्रेरित किया। दिसम्बर 2006 में भारतीय प्रधानमंत्री की जापान यात्रा के दौरान भारत-जापान "सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी" की रणनीतिक सम्बन्धी दस्तावेजो पर हस्ताक्षर किये। व रक्षा क्षेत्र में भी 2007 से लगातार सहयोग मजबूत किया।[4]

वर्तमान में प्रधानमंत्री मोदी ने परस्पर विश्वास, एक दूसरे के हितों और चिंताओं को समझते हुए निरन्तर उच्च स्तरीय वार्ताओं को दोहराया है, यह भारत व जापान संबंधों की विशिष्टता है।

हालांकि भारत व जापान के बीच लगभग दो दशकों से सुरक्षा संबंधी विचारों का आदान-प्रदान हो रहा है और अमेरिका एवं ऑस्ट्रेलिया के साथ (QUAD) 'चतुर्भुज सुरक्षा संवाद' के द्वारा दोनों ही देशों ने 'हिंद-प्रशांत' क्षेत्र को खुला एवं मुक्त बनाए (FOIP) रखने में साझा हितों की घोषणा भी की है। 'हिंद-प्रशांत' में अमेरिका-चीन हस्तक्षेप ने दोनों पक्षों को अपने रणनीतिक उद्देश्यों को लागू करने से रोके रखा हैं। न केवल एशिया बल्कि पूरे विश्व के अशांत क्षेत्र में शांति और व्यवस्था स्थापित करने के लिए दोनो देशों को एक साथ आने की आवश्यकता है।[5] राजनीतिक-सामरिक सहयोग को देखे तो अगस्त 2011 से लागू हुआ भारत-जापान व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (CEPA) भारत द्वारा किए गए सभी समझौते में सबसे विस्तृत है।[6] इसके अलावा जापान अमेरिका के बाद ऐसा दूसरा देश है, जिसके साथ भारत का 2+2 मंत्रिस्तरीय संवाद है। टोक्यो में निशिकासाई क्षेत्र "मिनी-इंडिया" के रूप में उभर रहा है। भारत जापानी कम्पनियों (सोनी, टोयोटा, होण्डा, सुजुकी) के लिए भी बड़ा बाजार है। अक्टूबर 2018 में पीएम मोदी की जापान यात्रा के दोरान 'भारत-जापान डिजिटल साझेदारी शुरू की गई थी तथा इंटरनेट ऑफ थिंगस, (IOT) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, (IT) रोबोटिक्स, क्वांटम कंप्यूटिंग, जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने पर वार्ता हुई । अगस्त 2025 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जापान यात्रा और जापानी प्रधानमंत्री इशिबा शिगेरू के साथ 15 वें भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन ने इस रिश्ते को 'अगली पीढ़ी' के लिए एक नए और अधिक व्यापक ढांचे में ढाल दिया है ।जिसे वर्तमान में हम भारत और जापान के बीच एक विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी के रूप में देख सकते हैं।[7]

1. राजनीतिक संबंध

भारत और जापान दोनों ही एशिया के प्रमुख लोकतान्त्रिक देश हैं। दोनों ही देशों ने संसदीय लोकतन्त्र पर आधारित राजनीतिक व्यवस्था को अपनाया है, जिसमे कानून का शासन, नागरिकों के मौलिक अधिकार, स्वतन्त्र न्यायपालिका एवं नागरिक स्वतंत्रताएँ हैं। यह वैचारिक समानता ही दोनों देशों में परस्पर विश्वास एवं सहयोग का मुख्य कारण है। 2006 में जापानी प्रधानमन्त्री शिन्जो आबे ने एक ऐतिहासिक भाषण भारतीय संसद में दिया 'एशिया के दो समुद्रों के मिलन' (Confluence of the Two Seas) का, जिसमें भारत-जापान के साझा लोकतान्त्रिक मूल्यों एवं एक स्वतन्त्र, खुले इंडो-पैसिफिक की परिकल्पना की गयी। यह भाषण उस राजनीतिक दृष्टि का प्रतीक है जो दोनों देशों को परस्पर निकट लाता है।[8]

2. आर्थिक संबंध

भारत और जापान दोनों देशों के बीच हितों की पूरकताओं को देखते हुए, वाणिज्यिक संबंधों में अधिक विकास की संभावनाएं हैं। भारत के विशाल बाजार और उसके संसाधनों, विशेष रूप से मानव संसाधनों सहित विभिन्न कारणों से जापान की भारत में रुचि बढ़ रही है। ऐतिहासिक भारत-जापान व्यापक आर्थिक

साझेदारी समझौते (सीईपीए) जो अगस्त 2011 से लागू हुआ ने दोनों देशों के बीच आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों को तेजी प्रदान की है। जिसके तहत 94% वस्तुओं पर शुल्क समाप्त करने का लक्ष्य है।

मार्च 2022 में जापान के पूर्व प्रधानमंत्री श्री फुमियो किशिदा की भारत यात्रा के दौरान, दोनों ने अगले पांच वर्षों में भारत में जापान से 5 ट्रिलियन येन के सार्वजनिक और निजी निवेश परियोजनाओं को वित्त पोषित किया जा सके। भारत और जापान के बीच द्विपक्षीय व्यापार 21 अरब अमेरिकी डॉलर रहा वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान इस अवधि में जापान से भारत को निर्यात 5.1 अरब अमेरिकी डॉलर और आयात 15.9 अरब अमेरिकी डॉलर रहा।

प्रमुख आयात-निर्यात वस्तुएं

भारत मुख्य रूप से कार्बनिक रसायन, वाहन, मछली और रत्न, एल्युमीनियम और उससे बने उत्पाद, निर्यात करता है, जबकि जापान से तांबा और उससे बने उत्पाद, मशीनरी, परमाणु रिएक्टर और लोहा-इस्पात का आयात किया जाता है ।[9]

भारत के वाणिज्य मंत्रालय के पिछले पांच वर्षों के निर्यात-आयात आंकड़े इस प्रकार हैं : (अरब अमेरिकी डॉलर)

वर्ष	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25 (अप्रैल-जनवरी 25)
भारत का जापान को निर्यात	4.43	6.18	5.46	5.15	5.1
भारत द्वारा जापान से आयात	10.9	14.39	16.49	17.69	15.9
भारत-जापान द्विपक्षीय व्यापार	15.33	20.57	21.96	22.85	21

स्रोत:- वाणिज्य मंत्रालय

निवेश और जापानी कंपनियां

भारत में वर्ष 2000 से दिसंबर 2024 तक कुल मिलाकर निवेश लगभग 43.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा है, जिससे एफडीआई के स्रोत देशों में जापान पांचवें स्थान पर है। भारत में जापानी एफडीआई मुख्य रूप से ऑटोमोबाइल, विद्युत उपकरण, दूरसंचार, रसायन, वित्तीय (बीमा) और दवा क्षेत्र में हुआ है। भारत में जापान के दूतावास और जापान विदेश व्यापार संगठन (JETRO) के नवीनतम संयुक्त सर्वेक्षण के अनुसार भारत में जापानी कंपनियों की संख्या1400 है, जिनमें से आधी विनिर्माण कंपनियाँ हैं। इसके साथ ही जापान में भी 100 से अधिक भारतीय कंपनियां हैं।[10]

आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल (एससीआरआई)

कोविड-19 के बाद आपूर्ति श्रृंखला को लचीला बनाने के लिए भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया द्वारा मिलकर एक त्रिपक्षीय पहल को 1 सितंबर, 2020 से शुरू किया गया। जिसका उद्देश्य हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में विविधीकरण के माध्यम से आपूर्ति श्रृंखला बनी रहे । इसकी औपचारिक शुरुआत, 27 अप्रैल 2011 को भारत, जापान, ऑस्ट्रेलिया के व्यापार मंत्रियों द्वारा एक त्रिपक्षीय मंत्रिस्तरीय वीडियो कॉन्फ्रेंस द्वारा किया गया[11]

आधिकारिक विकास सहायता (ODA)

जापान, भारत को ODA प्रदान करने वाला सबसे बड़ा देश रहा है जिसके द्वारा भारत को आर्थिक विकास परियोजनाएं जैसे बिजली, परिवहन परियोजनाए,बुनियादी ढांचा, स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में सहयोग करता हैं। जापानी ओडीए द्वारा मुम्बई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल,मेट्रो प्रोजेक्ट,नॉर्थ ईस्ट में कनेक्टिविटी परियोजनाएं चल रही है।

डिजिटल और स्टार्टअप

'भारत-जापान डिजिटल साझेदारी' (IJDP) की शुरुआत 2018 में की गई जिसके तहत बेंगलुरु में पहला स्टार्टअप हब स्थापित किया गया। इसके अलावा दोनों देश कौशल विकास,स्वच्छ ऊर्जा, औद्योगिक प्रतिस्पर्धा,स्वास्थ्य सेवा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सहयोग कर रहे हैं।

3. सामरिक और रक्षा संबंध

भारत और जापान दोनों के संबंधों में रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग प्रमुख अंग हैं जिसमें 'हिन्द-प्रशांत' क्षेत्र में शांति एवं स्थिरता का हित भी शामिल है। अगस्त 2000 भारत-जापान संबंधों को मजबूत करने के लिए प्रधानमंत्री मोरी और प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दोनों के बीच 'वैश्विक साझेदारी की स्थापना की। 2006 से दोनों देशों ने अपने संबंधों में 'वैश्विक एवं रणनीतिक साझेदारी' की स्थापना की, जिसे 2014 में 'विशेष रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारी' तक बढ़ाया व दोनों देशों ने 2025 में "सुरक्षा सहयोग पर संयुक्त घोषणा" (Joint Declaration on Security Cooperation) को जारी किया। अत: इनके संबंधों में रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।[12]

2+2 संवाद- दोनों देशों के विदेश और रक्षा मंत्रियों के बीच होने वाला रक्षा सहयोग का सर्वोच्च संवाद है। 2+2 की तीसरी बैठक नई दिल्ली में 20 अगस्त 2024 को हुई थी। इसमें स्वतंत्र और खुले में हिन्द-प्रशांत के प्रति अपनी रणनीति पर भी प्रकाश डाला।

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (NSA) स्तर का संवाद- 2025 में पहली बार भारत-जापान दोनों देशों के NSAs के मध्य एक संस्थागत संवाद शुरू किया गया है। जिससे उच्च स्तर पर रक्षा सहयोग स्थापित होगा।[13]

4. सैन्य अभ्यास

मालाबार अभ्यास : भारत, जापान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया (Quad) सदस्यों के बीच होने वाला बहुपक्षीय नौसैनिक अभ्यास हैं। जापान 2015 के बाद इसका स्थायी सदस्य बना जिसका 2025 में संस्करण गुआम में आयोजित किया गया।[14]

धर्म गार्जियन : यह थल सेनाओं के बीच होने वाला वार्षिक अभ्यास हैं, जिसकी शुरूआत 2018 से हुई। जिसका छठा संस्करण फरवरी-मार्च 2025 में जापान के माउंट फ़ूजी क्षेत्र में हुआ।[15]

वीर गार्जियन और शिन्यू मेत्री : वायु सेनाओं के बीच होने वाले संयुक्त युद्धाभ्यास हैं। 'वीर गार्जियन' यह लड़ाकू विमानों का अभ्यास है। वहीं 'शिन्यू मैत्री' परिवहन विमानों का अभ्यास है। रक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, जापान द्वारा भारत को 'यूनिकॉर्न' (UNICORN) एंटीना प्रणाली का हस्तांतरण एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो जापानी सैन्य उपकरणों के निर्यात नियमों में ढील के बाद संभव हुआ है।[16]

5. रक्षा उपकरण एवं तकनीक सहयोग

2014 का रक्षा आदान-प्रदान पर समझौता ज्ञापन और 2015 में दोनों देशों का 'रक्षा उपकरण एवं प्रौद्योगिकी सहयोग समझौते' पर हस्ताक्षर किये । इसमें जापान के US-2 उभयचर विमान तकनीक को भारत में लाने पर वार्ता हुई। लेकिन यह सौदा अभी पूर्ण नहीं हो सका हैं ।

एक्विजिशन एंड क्रॉस-सर्विसिंग एग्रीमेंट (ACSA) : 'एक्विजिशन एंड क्रॉस-सर्विसिंग एग्रीमेंट' (2020) जो दोनों देशों की सेनाओं के बीच 'आपूर्ति और सेवाओं का पारस्परिक प्रावधान' शामिल हैं। इस पर 10 सितंबर 2020 को हस्ताक्षर किए गए थे। यह हर 10 साल बाद स्वतः ही आगे बढ़ जाएगा। अत: इससे रसद (logistics) साझा करने से दोनों देशों की सेनाएं हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भी शांति व स्थिरता में योगदान देंगी।[17]

क्वाड एवं इंडो-पैसिफिक रणनीति : 'हिन्द-प्रशांत' एक गहन भू-राजनीतिक और भू-आर्थिक अवधारणा है। डेविड स्कोट ने इस शब्द में हिंद महासागर में जापान और अमेरिका जैसे प्रशांत क्षेत्र के देशों के भारत के साथ संबंधों और दक्षिण चीन सागर तथा दक्षिण और पश्चिम प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ संबंधों को शामिल करता है। जापान के पूर्व प्रधानमन्त्री शिन्जो आबे ने 'स्वतन्त्र एवं खुले इंडो-पैसिफिक' (FOIP) क्षेत्र की अवधारणा को दिया, जिसे भारत ने अपनी 'सागर' (Security and Growth for All in the Region) परियोजना से जोड़ा। जिसमे हिन्द महासागर एवं प्रशान्त महासागर में समुद्री सुरक्षा दोनों देशों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भारत के लिए हिन्द महासागर में चीनी नौसैनिक उपस्थिति का बढ़ना एवं जापान के लिए दक्षिण एवं पूर्वी चीन सागर में चीन का आक्रामक विस्तार, जापान की समुद्री सुरक्षा के लिए खतरा है।

क्वाड (Quad- Quadrilateral Security Dialogue) : एक महत्त्वपूर्ण अनौपचारिक रणनीतिक वार्ता मंच है। यह 2007 में आबे की पहल पर प्रारम्भ हुआ, यह भारत, जापान, अमेरिका एवं ऑस्ट्रेलिया के बीच एक राजनयिक साझेदारी है जो एक स्वतंत्र और खुले इंडो-पैसिफिक को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।, यह संवाद 2017 में पुनर्जीवित हुआ और 2021 में शासनाध्यक्षों के स्तर तक बढ़ाया भारत-जापान इस मंच के सर्वाधिक सक्रिय सदस्य हैं। जो हिन्द-प्रशांत क्षेत्र की शांति व स्थिरता के लिए प्रयासरत हैं। क्वाड के अन्तर्गत समुद्री और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा ,टीकाकरण कूटनीति, साइबर सुरक्षा, मानवीय सहायता, जलवायु परिवर्तन, अवसंरचना निवेश एवं महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों पर सहयोग के ठोस क्षेत्र में शामिल किए गए हैं। यह मंच एक नियम-आधारित, समावेशी क्षेत्रीय व्यवस्था के निर्माण में सहायक हैं।[18]

भारत-जापान एक्ट इस्ट फोरम : इसकी स्थापना दिसंबर 2017 में की गई। जिसका उद्देश्य भारत की 'एक्ट ईस्ट नीती' और जापान के 'स्वतंत्रत और खुले इंडो-पैसिफिक'(FOIP) के विजन के तहत भारत-जापान सहयोग का एक मंच प्रदान करना है। जो भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के आर्थिक आधुनिकीकरण,कनेक्टिविट,विकासात्मक अवसर, पीपल टु पीपल संपर्क संबंधी परियोजनाओं को पूर्ण करता है।[19]

नागरिक परमाणु सहयोग समझौता : नवम्बर 2016 में परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए भारत और जापान के बीच ऐतिहासिक असैनिक परमाणु सहयोग समझौते (Civil Nuclear Cooperation Agreement) पर हस्ताक्षर हुए यह समझौता इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इस समझौते के अन्तर्गत भारत में परमाणु ऊर्जा संयन्त्रों की स्थापना में जापानी तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग का मार्ग प्रशस्त हुआ हैं जो। भारत की ऊर्जा सुरक्षा एवं स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों की पूर्ति हेतु दीर्घकालिक महत्त्व रखता हैं।[20]

6. सांस्कृतिक संबंध

भारत और जापान के बीच 1956 में सांस्कृतिक समझौता हुआ। इसके अलावा जापान-भारत के बीच 'मिश्रित सांस्कृतिक आयोग' की स्थापना भी हुई जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर व्यापक विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक अंतर सरकारी मंच हैं।

इसके अतिरिक्त, विश्व सांस्कृतिक विरासत संरक्षण हेतु यूनेस्को/जापान ट्रस्ट फंड के माध्यम से, जापान विशेषज्ञों को भारत भेजकर और अन्य तरीकों से सांची और सतधारा के बौद्ध स्मारकों के संरक्षण और जीर्णोद्धार में सहायता कर रहा है। इसके अलावा भारतीय दूतावास में सितंबर 2009 में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र खोला जिसे बाद में 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 'विवेकानंद सांस्कृतिक केन्द्र' नाम दिया इसमें योग, हिन्दी, संस्कृत, तबला, ओडीसी, और भारतीय फिल्मी नृत्यों की कक्षाएं प्रदान करता है।[21]

चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

हालांकि भारत-जापान संबंध लगातार मजबूत हो रहे हैं, लेकिन इन संबंधों में कुछ चुनौतियां भी हैं जो दोनों के संबंधों को कहीं न कहीं प्रभावित भी करती है।

आर्थिक और व्यापार संबंधी चुनौतियाँ

भारत और जापान दोनों देशों के बीच व्यापार असंतुलन हैं जिसमे द्विपक्षीय व्यापार जापान के पक्ष में हैं। CEPA के बाद भी भारत का जापान के साथ व्यापार घाटा बना हुआ है। जो 2024 में $12.54 बिलियन हैं, भारतीय बाजार में भी चीन और कोरियाई कंपनियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा बनी रहती हैं। इसके अलावा जापानी बाजार की कठोर नियामक प्रक्रियाएं एवं जापानी कंपनियों की अधिक सतर्क और धीमी निर्णय लेने की प्रक्रिया भी दोनों देशों के व्यापारिक संबंधों में रुकावट है।

बुनियादी ढांचा और तकनीकी चुनौतियाँ- कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण उत्तर-पूर्व में परियोजना के पूरे होने में धीमी गति, MAHSR जैसी मेगा परियोजनाओं में भूमि अधिग्रहण की जटिलता,बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPR) के लागु होने को लेकर चिंताएं ,सेमीकंडक्टर निर्माण के लिए आवश्यक बिजली और जल आपूर्ति को लेकर समस्या।

रणनीतिक चुनौतियाँ - सीमा विवाद (Himalayas vs East China Sea) पर प्राथमिकताओं का अंतर। ,दक्षिण चीन सागर में प्रत्यक्ष भूमिका निभाने पर भारत का सतर्क रुख। रक्षा सौदों (जैसे US-2 विमान) में लंबे समय से जारी गतिरोध , चीन के साथ आर्थिक संबंधों को रणनीतिक प्रतिस्पर्धा से अलग रखने की चुनौती।

राजनीतिक चुनौतियाँ - रूस-यूक्रेन संघर्ष पर भारत-जापान दोनों देशों के अलग-अलग मत हैं। क्योंकि भारत के रूस से अच्छे ऐतिहासिक संबंधों के होने के कारण निर्भरता के कारण भारत की 'रणनीतिक स्वायत्तता' का मत वहीं जापान की 'पश्चिमी गठबंधन' को प्राथमिकता देना।

सांस्कृतिक अंतर की चुनौतियाँ - भारत और जापान दोनों देशों की कार्य संस्कृति में अधिक अंतर हैं, जहाँ जापान में अनुशासन पर ज़ोर रहता है। वहीं भारतीय संस्कृति में लचीलापन होता हैं इसके अलावा दोनों देशों के बीच भाषाई अन्तर भी बड़ी बाधा है। छात्रों और पर्यटकों के लिये वीजा नियमों में भी जटिलता है।

संभावनाएँ

भारत-जापान संबंध केवल अपनी द्विपक्षीय हितों तक सीमित नहीं है, बल्कि ये वैश्विक शांति, स्थिरता के लिए भी आवश्यक है। इसलिए भारत-जापान संबंधों का भविष्य संभावनाओं से पूर्ण है।

आर्थिक क्षेत्र में संभावनाएँ- भारत में जापान के 10 ट्रिलियन येन के नए निवेश के साथ उद्योगों का आधुनिकीकरण जिसमे 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत जापानी इलेक्ट्रॉनिक और ऑटोमोबाइल का बड़े

पैमाने पर भारत में उत्पादन की संभावनाएँ ।

रणनीतिक और सुरक्षा क्षेत्र में संभावनाएँ - समुद्री डोमेन जागरूकता(MDA) के लिए डेटा के आदान-प्रदान में सुविधा, दक्षिण एशिया और अफ्रीका में संयुक्त कनेक्टिविटी परियोजनाएं (AAGC) जिसके द्वारा 'मुक्त और खुले इंडो-पैसिफिक' (FOIP) के लिए साझा प्रयास जिसमें क्वाड (Quad) के माध्यम से 'हिंद-प्रशांत' में चीन को संतुलित करने में सहयोग एवं अंतरिक्ष और साइबर सुरक्षा में सहयोग ।

ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग की संभावना- स्वच्छ ईंधन (जैसे बायोगैस और एथेनॉल) के लिए संयुक्त अनुसंधान में सहयोग जिसके द्वारा पर्यावरण अनुकूल स्वच्छ ऊर्जा का मिलना, ठोस कचरा प्रबंधन और प्रदूषित जल उपचार में तकनीकी साझेदारी की संभावना हैं ।

निष्कर्ष

इसमें कोई संदेह नहीं हैं कि पिछले दो दशकों में भारत-जापान संबंधों का स्वरूप बदला है। भारत जापान को, एक समान विचारधारा वाला साझेदार मानता है। जो भारत के आर्थिक विकास में सहयोग कर सकता है। इसके साथ ही भारत व जापान दोनों ही देशों के हित भी एक दूसरे के पूरक हैं जो इनके संबंधों को निकटता प्रदान करते हैं। जैसे विश्व बहुध्रुवीय विश्व के निर्माण एवं चीन को 'हिन्द-प्रशांत' में संतुलन करने के लिए आर्थिक विकास व निवेश को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसके अलावा। 15वें भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन (2025) के परिणाम और 'अगले दशक के लिए संयुक्त विजन' यह बताता हैं कि दोनों राष्ट्र अपनी घरेलू चुनौतियों को एक-दूसरे की शक्तियों के माध्यम से हल करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

संदर्भग्रंथ सूची

1. भारतीय दूतावास, टोक्यो, (2025), भारत-जापान द्विपक्षीय संबंधों पर संक्षिप्त विवरण, https://www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Japan-India_Bilateral-Aug-2025.pdf।
2. भारतीय दूतावास, टोक्यो, (2026), सांस्कृतिक संबंधों और ऐतिहासिक संपर्कों का सारांश, https://www.indembassy-tokyo.gov.in/eoityo_pages/NjA3।
3. जापान इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (JIIA), (2015), शीत युद्ध और उसके बाद के दौरान जापान-भारत संबंध, https://www.jiia.or.jp/jpn/upload/160411_Takenori_Horimoto.pdf।
4. विदेश मंत्रालय, (2006, 14 दिसंबर), जापानी संसद में प्रधानमंत्री का भाषण, भारत सरकार, https://www.mea.gov.in/outoging-visit-detail-hi.htm?2407/Prime+Ministers+speech+to+the+Diet।

5. विदेश मंत्रालय, (2023, 20 मई), क्वाड लीडर्स समिट 2023 विजन स्टेटमेंट, भारत सरकार, https://www.mea.gov.in/quad-summit-2023.htm।
6. विदेश मंत्रालय (MOFA), जापान, (2011), व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (CEPA) पाठ, https://www.mofa.go.jp/region/asia-paci/india/epa201102/pdfs/ijcepa_ba_e.pdf।
7. द हिंदू, (2025), पीएम मोदी की टोक्यो यात्रा: 15वें भारत-जापान शिखर सम्मेलन के परिणाम, https://www.thehindu.com/news/national/pm-narendra-modi-japan-visit-updates-modi-japanese-pm-summit-2025/article69987489.ece।
8. आबे, शिंजो, (2007, 22 अगस्त), "दो समुद्रों का संगम" [भाषण], भारतीय संसद का संयुक्त सत्र, नई दिल्ली, जापान का विदेश मंत्रालय, https://www.mofa.go.jp/region/asia-paci/pmv0708/speech-2.html।
9. वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत, (2025), वार्षिक रिपोर्ट 2024-25, https://www.commerce.gov.in/wp-content/uploads/2025/08/Commerce_AR-2024-25-English-1.pdf।
10. ओईसी वर्ल्ड (OEC World), (2026), द्विपक्षीय व्यापार प्रोफ़ाइल: भारत और जापान, https://oec.world/en/profile/bilateral-country/ind/partner/jpn।
11. यूथ डेस्टिनेशन, (2021), सप्लाई चेन रेजिलिएंस इनिशिएटिव (SCRI) विश्लेषण, https://youthdestination.in/supply-chain-resilience-initiative-scriby-india-japan-and-australia/।
12. भारत शक्ति, (2024), भारत, जापान रक्षा तकनीक सहयोग को व्यापक बनाने पर सहमत, https://bharatshakti.in/india-japan-agree-to-widen-defence-tech-collaboration-transfer-of-stealth-warship-antennas/।
13. दिल्ली पॉलिसी ग्रुप, (2024), भारत-जापान 2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता: विश्लेषण, https://www.delhipolicygroup.org/uploads_dpg/publication_file/india-japan-22-ministerial-dialogue-marks-modest-progress-5177.pdf।
14. भारतीय नौसेना की आधिकारिक वेबसाइट, (2025), गुआम में अभ्यास मालाबार 2025, https://c4scourses.in/national-affairs/exercise-malabar-2025/।
15. प्रेस सूचना ब्यूरो (PIB), भारत, (2026), संयुक्त सैन्य अभ्यास 'धर्म गार्जियन' (DHARMA GUARDIAN) चौबटिया में शुरू, https://www.pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=2232191।
16. ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन (ORF), (2025), यूनिकॉर्न (UNICORN) मास्ट्स पर भारत-जापान साझेदारी: नौसेना प्रौद्योगिकी में एक छलांग, https://www.orfonline.org/expert-speak/india-japan-partnership-on-unicorn-masts-a-leap-in-naval-technology।

17. भारत शक्ति, (2024), भारत, जापान रक्षा तकनीकी सहयोग को व्यापक बनाने पर सहमत (स्टील्थ युद्धपोत एंटेना का हस्तांतरण), https://bharatshakti.in/india-japan-agree-to-widen-defence-tech-collaboration-transfer-of-stealth-warship-antennas/।
18. बनर्जी, स्तुति, (2025, 20 जनवरी), क्वाड के बीस साल: हिंद- प्रशांत में सहयोग निर्माण, भारतीय वैश्विक परिषद (ICWA), https://www.icwa.in/show_content.php?lang=2&level=3&ls_id=12299&lid=7495।
19. भारतीय दूतावास, टोक्यो, (2017), भारत-जापान एक्ट ईस्ट फोरम की स्थापना और उद्देश्य, https://www.indembassy-tokyo.gov.in/eoityo_pages/NjA3।
20. विदेश मंत्रालय (MEA), भारत, (2016), भारत और जापान के बीच असैन्य परमाणु सहयोग समझौता, https://www.mea.gov.in/images/attach/Agreement_Nuclear_Energy_japan.pdf।
21. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR), (2024), विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, टोक्यो, https://iccr.gov.in/indianculturalcenter/vivekananda-cultural-centre-tokyo-japan।